Кена упанишада केनोपनिषत्

आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रमथोबलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि ।सर्वं ब्रह्मोपनिषदं माहं ब्रह्म निराकुर्यां मा मा ब्रह्मनिराकरोद् निराकरणमस्त्वनिराकरणं मेऽस्तु । तदात्मनि निरते य उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि सन्तु ते मयि सन्तु॥

√āpyai I Ā. – увеличиваться, расти, расширяться, возвышаться;
√nirākar VIII P. – отделять, устранять, отталкивать, отрицать, не признавать;
√niram I Ā. – успокаиваться, прекращаться, довольствоваться;

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

Кена упанишада
केनोपनिषत्

आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रमथोबलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि सर्वं ब्रह्मोपनिषदं
माहं ब्रह्म निराकुर्यां मा मा ब्रह्मनिराकरोदनिराकरणमस्त्वनिराकरणं मेऽस्तु तदात्मनि निरते अ

य उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि सन्तु ते मयि सन्तु

√āpyai I Ā. – увеличиваться, расти, расширяться, возвышаться;
√nirākar VIII P. – отделять, устранять, отталкивать, отрицать, не признавать;
√niram I Ā. – успокаиваться, прекращаться, довольствоваться;

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः
केनेषितं पतति प्रेषितं मनः केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्त

केनेषितां वाचमिमां वदन्ति चक्षुः श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति॥ १॥

√iṣ I, IV P. (*p.p.* iṣita) – идти, приводить в движение, ускорять;
preṣ VI P. – приводить в движение; высылать, посылать;
√pre (pra- √i) II P. – появляться, показываться, возникать, выступать; уходить, умирать;

13/20 (средний); 13 - основной текст; 20 - заголовок

10/16 (мелкий); 10 - основной текст; 16 - заголовок